आगम-अनुयोग

भाग-1

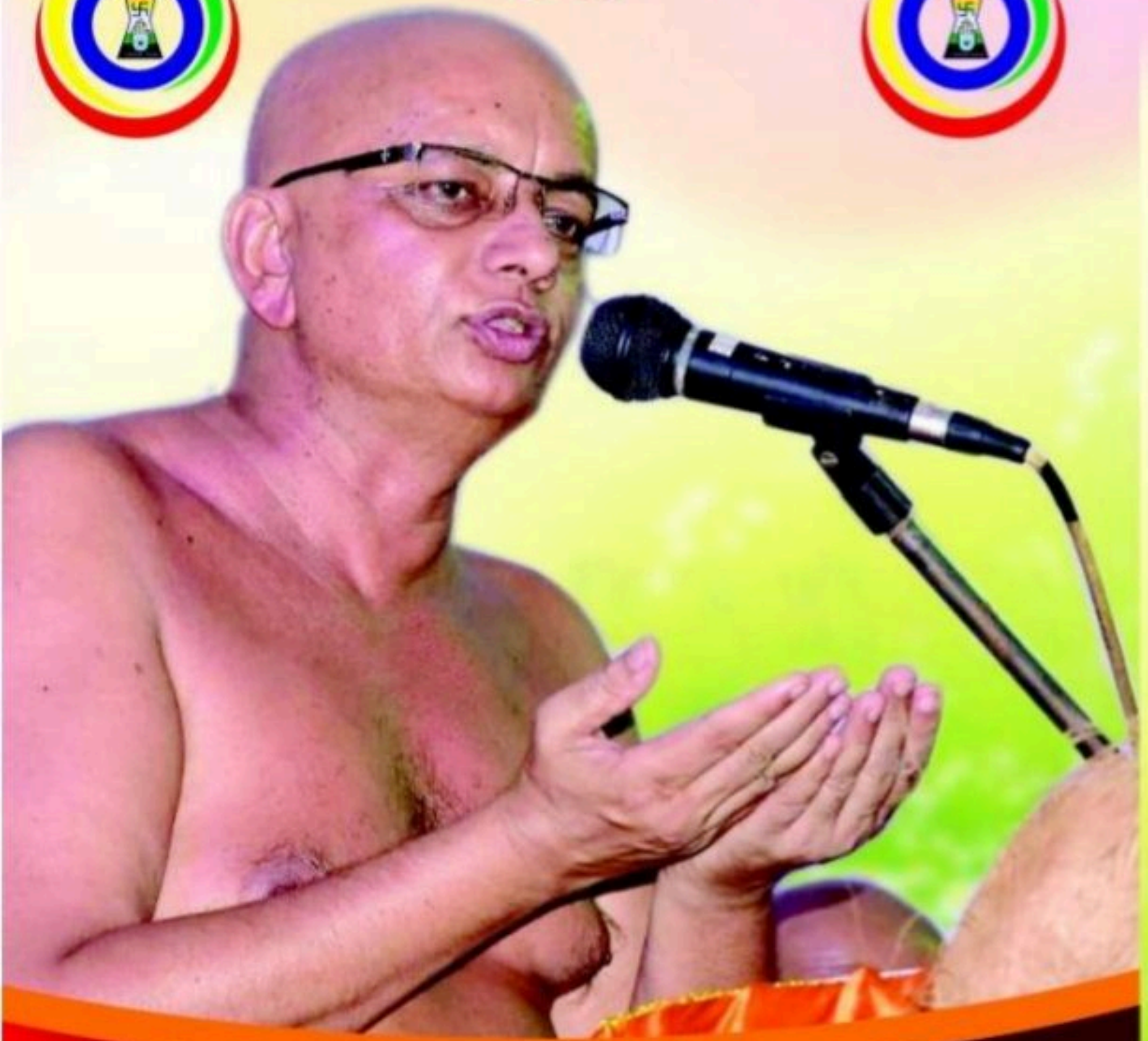

रचयिता-आचार्यश्री 108 आर्जवसागर

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

जैन ग्रंथों का संपूर्ण सार : आगम-अनुयोग

आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित परम पूज्य आध्यात्म योगी आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागरजी महाराज ने मोक्षमार्गोपयोगी अनेक बहुमूल्य कृतियों की रचना की है; जिनमें 'आगम-अनुयोग' एक ऐसी अनूठी, अद्वितीय (Unique)कृति है, जिसमें जैन धर्म के चारों अनुयोगों (प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग) रूप ग्रंथों का सार समाहित है। यह बहुमूल्य कृति स्वाध्याय प्रेमी श्रावकों के लिये अत्यंत मूल्यवान एवं बहुउपयोगी है। इसके माध्यम से आचार्यश्री ने जैन आगम की, लोक-अलोक की विस्तृत जानकारी का समावेश इसमें किया गया है। यह कृति प्रश्नोत्तरी रूप में अत्यंत सरल शब्दों में लिखित है। इसके माध्यम से सम्यग्ज्ञान भूषण, सिद्धांत भूषण पदवी की उपाधि भी प्राप्त हो सकती है। आगम अनुयोग (प्रश्नोत्तर प्रदीप) का मुख्य उद्देश्य भव्यजीवों को स्वाध्याय के माध्यम से आगम ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कराना है।

गुरुवर की यह अनूठी कृति संपूर्ण जैन दर्शन को बताने वाली है एवं अत्यंत सरल शब्दों में आगम ग्रन्थों का मुख्य ज्ञान कराने वाली है। हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें गुरुवर रचित इस 'आगम-अनुयोग' कृति को पढ़ने का, इसका स्वाध्याय करने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

'आगम-अनुयोग' कृति में करीब 1274 प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रथमानुयोग एवं करणानुयोग का विशेष वर्णन किया है।

त्रेसठ (63) शलाका पुरुषों, कुलकरों आदि महापुरुषों संबंधी पुराणों का संपूर्ण सारांश 'आगम-अनुयोग' में प्रथमानुयोग में लगभग 404 प्रश्नों में समाहित है। यह प्रथमानुयोग का ज्ञान भव्यों के लिये अत्यंत उपकारी है। इसके ज्ञान से जीवों को सम्यग्दर्शनादि रूप बोधि और धर्मध्यान, शुक्लध्यान रूप समाधि की प्राप्ति होती है। इसी अनुयोग में भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था, पुरुषार्थ की भी विस्तृत विवेचन है।

आचार्य गुरुदेव ने 63 शलाका पुरुषों में भी सर्वप्रथम तीर्थंकर महापुरुषों का वर्णन किया है कि तीर्थंकर कौन होते हैं? किस तरह तीर्थंकर प्रकृति का संचय होता है? भरत क्षेत्र, विदेह क्षेत्र संबंधी कितने-कितने तीर्थंकर होते हैं? किस तरह सौधर्मेन्द्र-शचि इन्द्राणि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु का जन्मोत्सव मनाते हैं? किस कारण से उन्हें वैराग्य होता है? किस तरह अयोध्या की रचना होती है? कैसे उन्हें केवलज्ञान प्राप्त होता है? और उनका समवशरण कितना विशाल विस्तार वाला होता है? कौन से जीव उस समवशरण में उनकी दिव्यध्वनि रूप उपदेश को ग्रहण करते हैं? आदि विशेष शंकाओं का समाधान इस प्रथमानुयोग खण्ड में प्रश्नोत्तर के माध्यम से किया गया है। तीर्थंकरों के विशेष वर्णन के बाद चक्रवर्ती और उनका वैभव आदि एवं बलदेव, नारायण, प्रतिनारायण, कामदेव आदि महापुरुषों का भी उल्लेख इसमें समाहित है।

करणानुयोग का वर्णन भी प्रश्न 405 से लेकर 1274 प्रश्न तक किया गया है, जिसमें विशेष रूप से तीन लोक का वर्णन समाहित है। अर्थात् लोक-अलोक का विभाग, गणित, उसकी रचना एवं उसमें जीवों का निवास, युग परिवर्तन, प्ररूपणा आदि का ज्ञान प्राप्त कराने वाला यह करणानुयोग खण्ड है। तीन लोक (ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक) के वर्णन में अधोलोक में नरकादि एवं उनके पटलों का विस्तार, वहाँ का वातावरण, नरक के दुःख वहाँ उत्पन्न होने वाले जीवों की लेश्या, नरकों की आयु एवं वहाँ कौन से जीव किस कारण से जन्म लेते हैं आदि का भी मुख्यतः से वर्णन किया गया है। मध्यलोक में भी युग परिवर्तन, कल्पकाल, उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल आदि का भी विशेष वर्णन है। एवं देवों की विस्तृत जानकारी भी इसमें समाहित है। (सर्वद्वीप और समुद्र, उनपर स्थित पर्वतों का, भोगभूमि-कर्मभूमि की व्यवस्था का, अकृत्रिम चैत्यालयों का भी विशेष वर्णन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से किया गया है।)

यह 'आगम-अनुयोग' प्रश्नोत्तर-प्रदीप हम भव्य जीवों को कल्याणकारी रूप है यह कृति मोक्ष रूपी पद (शिवालय) को शीघ्र ही प्रदान करायेगी।

जिनके दर्शन से नयन धन्य हो जाते हैं, जिनको आहार दान देने से हाथ धन्य हो जाते हैं, जिनका सुमरण करने से मन धन्य हो जाता है, जिनका गुणगान करने से कण्ठ धन्य हो जाता है, जिनके पास जाने से जीवन धन्य हो जाता है। ऐसे आगम-अनुयोग ग्रन्थ के प्रणेता परमोपकारी, धर्म प्रभावक, षोडशकारण व्रत प्रणेता, मोक्षमार्ग उपदेशक, आध्यात्मिक संत आचार्य गुरुदेव श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के चरणों में बारंबार नमोस्तु.... नमोस्तु.... नमोस्तु।

इंजी. चहिन ऋषिका जैन, दमोह

दिनांक- 3 मई से 2 जून 2022 तक

आयोजक- गुरु आर्जव वाणी एवं भाव विज्ञान परिवार, भोपाल

अध्याय - 4. चक्रवर्ती का वैभवादि

प्र. 301 तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्ष प्राप्ति के पूर्व शारीरिक अवगाहना एवं मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त आत्म प्रदेशों की अवगाहना (ऊँचाई) कितनी थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्ष प्राप्ति के पूर्व शारीरिक अवगाहना पाँच सौ धनुष (चार हाथ का एक धनुष) एवं मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त आत्म-प्रदेशों की अवगाहना अन्तिम शरीर से किञ्चित् न्यून थी।

प्र. 302 मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त सिद्ध भगवान् के आत्म प्रदेशों की अवगाहना अन्तिम शरीर से किञ्चित् न्यून में क्या विशेषता है?

उत्तर मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त अन्तिम शरीर से सिद्धों के आत्मप्रदेशों की अवगाहना किञ्चित् न्यून होना यह सर्वत्र आगम प्रमाणिक माना गया है, क्योंकि शरीर की अवगाहना को हीनाधिक करने वाले उस आयु कर्म का क्षय हो चुका है। परन्तु किञ्चित् न्यून का प्रमाण कितना होगा यह विचार करने योग्य है।

प्र. 303 मनुष्य के अन्तिम शरीर से मुक्त होने के उपरान्त उस अन्तिम शरीर से सिद्ध परमेष्ठी के आत्म-प्रदेशों की अवगाहना किञ्चित् न्यून जो सर्वत्र आगम में वर्णित की गई है उस किञ्चित न्यून का सही कारण व प्रमाण क्या है?

उत्तर सम्पूर्ण दृश्यमान मनुष्य के शरीर की अवगाहना को लक्ष्य में रखकर किञ्चित् ऊन चरम शरीर प्रमाण सिद्धों के आत्म प्रदेशों की अवगाहना का जो कथन किया गया है उसके प्रसंग पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होगा कि शरीर के भीतर मुख, उदर आदि में आत्म प्रदेशों से शून्य भाग भी है, उसको घटाने पर शरीर का घनफल एक तृतीय (1/3) भाग शून्य होगा अत: तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थ के अनुसार यह सैद्धान्तिक कथन है कि अंतिम शरीर से एक तृतीयांश (1/3) भाग प्रमाण हीन सिद्धों की अवगाहना जानना चाहिए। (ति.प.)

प्र. 304 चक्रवर्ती महापुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर पूर्व जन्म की तपस्या के पुण्य से स्वर्गिक सुखों का भोगकर मनुष्य लोक की कर्मभूमि में जन्म लेकर षट्खण्ड पृथ्वी के अधिपति रूप पुण्य पुरुष कहलाने वाले चक्ररत्न आदि चौदह रत्नों और कालनिधि आदि नव निधियों के जो स्वामी होते हैं उन्हें चक्रवर्ती कहते हैं।

प्र. 305 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमासुषमा काल में उत्पन्न हुये बारह चक्रवर्तियों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर बारह चक्रवर्तियों के नाम क्रमश: 1. भरत, 2. सगर, 3. मघव, 4. सनत्कुमार, 5. शान्तिनाथ, 6. कुन्थुनाथ, 7. अरहनाथ, 8. सुभौम, 9 पद्मनाथ (महापद्म), 10. हरिषेण, 11. जयसेन, और 12. ब्रह्मदत्त इस प्रकार हैं।

प्र. 306 ऊपर वर्णित भरत आदिक बारह चक्रवर्तियों की जन्मभूमि कौन-सी थीं?

उत्तर भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों की जन्मभूमियाँ क्रमशः- 1. अयोध्या, 2.अयोध्या, 3. श्रावस्ती (कौशलपुर), 4. हस्तिनागपुर, 5. हस्तिनागपुर, 6. हस्तिनागपुर, 7. हस्तिनागपुर, 8 अयोध्या, 9. हस्तिनागपुर, 10. कपिलनगर (भोगपुर), 11. कौशाम्बी, 12. कंपिलनगर इसप्रकार थीं।

प्र. 307 भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों के जनक और जननी के शुभ नाम क्या थे?

उत्तर भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों के जनक (पिता), जननी (माता) के क्रमशः शुभ नाम-1. ऋषभदेव-यशस्वति, 2. विजय-सुमंगला, 3. सुमित्र-भद्रवति, 4. विजय-सहदेवी, 5. विश्वसेन-ऐरादेवी, 6. सुरसेन-श्रीकान्ता, 7.सुदर्शन-मित्रसेना, 8. कीर्तिवीर्य-तारादेवी, 9.पद्मरथ-मयूरीप्रिया, 10. हरिकेतु-विप्रादेवी, 11.श्रीविजय-यशोवती और 12. ब्रह्मरथ-चूलादेवी जानना चाहिए।

प्र. 308 भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों की उत्पत्ति के समय कौन-से तीर्थंकर का तीर्थकाल प्रवर्तमान था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (वृषभनाथ) के तीर्थकाल में उन तीर्थंकर के ही समय उत्पन्न हुए थे। सगर चक्रवर्ती तीर्थंकर अजितनाथ के ही तीर्थकाल के समय उत्पन्न हुए थे। मघव चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर धर्मनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तन था। सनत्कुमार चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय भी धर्मनाथ तीर्थंकर का तीर्थकाल प्रवर्तमान था। तीर्थंकर शांतिनाथ, तीर्थंकर कुन्थुनाथ और तीर्थंकर अरहनाथ स्वयमेव चक्रवर्ती थे। सुभौम चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर अरहनाथ के मोक्षोपरान्त उनका ही तीर्थकाल प्रवर्तमान था। पद्मनाथ (महापद्म) चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर मल्लिनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तमान था। हरिषेण चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर मुनिसुव्रत का तीर्थकाल प्रवर्तमान था। जयसेन चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर नमिनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तमान था और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर नेमिनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तमान था।

प्र. 309 चक्रवर्तियों के शरीर में पांचों इन्द्रियों से ग्रहण करने योग्य विषय सम्बन्धी बल कितना होता है?

उत्तर चक्रवर्ती अपनी स्पर्शनेन्द्रिय से 9 योजन तक का विषय, रसनेन्द्रिय से 9 योजन तक का विषय और घ्राणेन्द्रिय से भी 9 योजनों तक का विषय जान लेते हैं, चक्षुरिन्द्रिय से $47263\frac{7}{20}$ योजन तक देख सकते हैं और श्रोत्रेन्द्रिय से 12 योजन तक का शब्द सुन लेते हैं।

प्र. 310 चक्रवर्तियों के सप्तांग बल कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों के 1. स्वामी, 2 अमात्य, 3 देश, 4. दुर्ग, 5. खजाना, 6. षडंगबल और 7. मित्र इस तरह सात अंगबल होते हैं।

प्र. 311 चक्रवर्तियों का षडंगबल किस तरह का होता है?

उत्तर 1.चक्रबल, 2. चौरासी लाख भद्र हस्थी (गज), 3. चौरासी लाख रथ, 4. अठारह करोड़ जातिवंत (सुलक्षणयुत) घोड़े, 5. चौरासी करोड़ वीरभट (पैदल सैनिक-योद्धा), 6. असंख्यात विद्याधर सैन्य

रूप चक्रवर्तियों का षडंगबल होता है।

प्र. 312 चक्रवर्तियों के दशांग भोग कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों के 1. दिव्यपुर (पट्टण), 2. दिव्य भाजन, 3. दिव्य-भोजन, 4. दिव्य शय्या, 5. दिव्य आसन, 6. दिव्य नाटक, 7. दिव्य रत्न, 8. दिव्य निधियाँ, 9. दिव्य सैन्य और 10. दिव्य वाहन इस तरह दशांग भोग होते हैं।

प्र. 313 चक्रवर्ती के भोग रूप दिव्य-रत्न कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के दिव्य-रत्न चौदह होते हैं। जिनके नाम हैं- 1. सेनापतिरत्न, 2. गृहपतिरत्न(भद्रमुख-हर्म्यपति), 3. पुरोहित रत्न (बुद्धिसमुद्र), 4. तक्षरत्न (कामवृष्टि-स्थपति), 5. स्त्रीरत्न, 6. गजपतिरत्न (विजयगिरि), 7. अश्वरत्न (पवनंजय), 8. चक्ररत्न (सुदर्शनचक्र), 9. छत्ररत्न (सूर्यप्रभ), 10. खड्गरत्न (भद्र-मुख असि), 11. दण्डरत्न (प्रवृद्धवंग), 12. काकिणी रत्न, 13. चूड़ामणि रत्न (चिंतामणि), 14. धर्मरत्न (चर्मरत्न)।

प्र. 314 चक्रवर्ती के सेनापतिरत्न का क्या महत्व है?

उत्तर एक आर्यखण्ड और पाँच म्लेच्छखण्डों रूप षट्खण्डों तथा अन्य दिग्विष्टरों की विजय प्राप्ति में सहायक सेना नायक रूप सेनापतिरत्न है।

प्र. 315 चक्रवर्ती के गृहपतिरत्न का क्या महत्त्व है?

उत्तर राजमहल का हिसाब-किताब (लेखा-जोखा) आदि रूप व्यवहार चलाने वाला भण्डारी गृहपतिरत्न होता है।

प्र. 316 चक्रवर्ती के पुरोहितरत्न का क्या महत्त्व है?

उत्तर धर्मप्रेरक बुद्धि द्वारा सर्वजनों को धर्म, कर्मानुष्ठान पूर्वक सलाह व प्रेरणा रूप बुद्धि का समुद्र पुरोहितरत्न होता है।

प्र. 317 चक्रवर्ती के तक्षरत्न से क्या प्रयोजन है?

उत्तर राजमहल, मंदिर, प्रासाद, पुल और तम्बू आदिक को उत्तम रीति से तैयार करने-करवाने वाला उत्तम कारीगर रूप तक्षरत्न है।

प्र. 318 चक्रवर्ती के स्त्रीरत्न का क्या महत्त्व है?

उत्तर चक्रवर्ती की छ्यानवे हजार युवती-बल्लभाओं में जो अत्यन्त प्रिय प्रमुख बल्लभा होती वह पट्टरानी रूप स्त्रीरत्न है।

प्र. 319 चक्रवर्ती के गजपतिरत्न से क्या इष्ट सिद्ध होता है?

उत्तर रथ सवारी के प्रयोजन हेतु एवं अरिनृपों के गजघटाओं का विघटन करने वाला गजपति रत्न विजय सिद्धि का कारण है।

प्र. 320 चक्रवर्ती के अश्व रत्न से क्या प्रयोजन सिद्ध होता है?

उत्तर तिमिश्र गुफा के कपाट- विघटन होते ही बारह योजन के क्षेत्र को एक छलांग में लांघने और दौड़ने की

सामर्थ्य रखने वाला अश्वरत्न होता है। जिसके माध्यम से चक्रवर्ती अपनी विशाल सेना को लेकर विजयार्ध पर्वत के आगे जाकर भी वहाँ पर स्थित म्लेच्छ खण्डों पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

प्र.321 चक्रवर्ती के चक्ररत्न का क्या सदुपयोग होता है?

उत्तर अन्याय व अनीति-कारक जनों का संहारक चक्ररत्न आयुध सेना के अग्रिम गतिमान चहुँओर प्रकाश फैलाने वाला और चक्रवर्ती की छहों खण्डों पर विजय पताका फैलाने वाला प्रमुख चक्र रत्न होता है।

प्र. 322 चक्रवर्ती का छत्ररत्न किस तरह सुशोभित होता है?

उत्तर कटक (सेना) के ऊपर आने वाली वर्षादिक बाधाओं को दूर करने वाला रत्न छत्ररत्न कहलाता है जो सर्व जनानन्दमय सुशोभित होता है।

प्र. 323 चक्रवर्ती का खड्गरत्न क्या प्रयोजन रखने वाला है?

उत्तर चक्रवर्तियों के चित्तोत्सव को करने वाला अन्यायी जनों का संहारक खड्गरत्न होता है।

प्र. 324 चक्रवर्ती का दण्डरत्न का क्या विशिष्ट कार्य होता है?

उत्तर चक्रवर्ती का दण्डरत्न मार्ग को स्वच्छ व निरापद करने वाला, गुफाओं के कपाट खोलने वाला, वृषभांचल पर्वत पर प्रशस्ति लिखने के काम आने वाला, शत्रुओं को दण्डित करने वाला तथा एक हजार योजन प्रमाण तक की भूमि को चीर देने में समर्थ ऐसे विशिष्ट कार्य का संपादक दण्डरत्न होता है।

प्र. 325 चक्रवर्ती के काकिणीरत्न की क्या महिमा है?

उत्तर काकिणी अस्त्र गुफाओं के घोर अंधकार में प्रकाश फैलाने वाला गुफाओं या अंधकार मय प्रदेशों की दीवार पर जिस रत्न से सूर्य-चन्द्र मण्डल का आकार लिखते ही अतिशयवान प्रकाश हो जावे ऐसा रत्न व प्रशस्ति लिखने का भी कार्य करने वाला रत्न काकिणीरत्न विशिष्ट महिमा कारक होता है।

प्र. 326 चक्रवर्ती के चूड़ामणि रत्न की क्या विशेषता है?

उत्तर इच्छित पदार्थों को देने में समर्थ तथा बाह्य वस्तुओं को प्रकाशित करने वाला रत्न विशेष चूड़ामणि रत्न कहलाता है।

प्र. 327 चक्रवर्ती का धर्मरत्न या चर्मरत्न किसे कहा जाता है?

उत्तर समुद्र में या भूमि जल मग्न हो जाने पर नीचे भूमि-सम सहारा बन छत्ररत्न से मिलकर अण्डाकार बनकर सम्पूर्ण कटक (सेना) की रक्षा करने वाला, संसार समुद्र से पार लगाने वाले धर्मसम बड़े-बड़े नद व नदियों तथा समुद्र से पार लगाने वाला धर्म या चर्मरत्न कहलाता है।

प्र. 328 चक्रवर्ती के इन चौदह रत्नों में से किन्हीं रत्नों में अन्य विशेष कार्य व प्रमाणादि सम्बंधी क्या विशेषता है?

उत्तर
- चक्रवर्ती के सेनापति आदिक सात रत्न चेतन (सजीव) तथा चक्ररत्न आदिक सात रत्न अजीव होते हैं।

- पुरोहित रत्न धर्म-कर्म रूप अनुष्ठानों के साथ-साथ रण संग्राम में सैनिकों के रोग व घाव-व्रणादिक के सुयोग्य उपचार का कार्य भी किया करता है।
- पट्टरानी रूपी स्त्रीरत्न के साथ क्रीड़ा के समय चक्रवर्ती स्वाश्रित अन्य रानियों के साथ भी क्रीड़ा करने के काल में अधिकाधिक छ्यानवे हजार भी रूप धारण कर लेता है जिसे अवलोकन कर पट्ट (मुख्य) रानी रूपी स्त्रीरत्न को अत्यन्त सन्तुष्टि का अनुभव होता है।
- छत्र रत्न का प्रमाण एक धनुष प्रमाण होते हुए भी चक्रवर्ती के स्पर्श किये जाने पर वह छत्ररत्न आवश्यकतानुसार बारह योजन तक विस्तृत हो जाया करता है।
- काकिणी रत्न का प्रमाण चार अंगुल प्रमाण वाला होता है तथा इस रत्न के माध्यम से गुहादिक अंधकार वाले स्थलों पर एक-एक योजन के अन्तराल से सूर्य-चन्द्र-सम प्रकाश की उपलब्धि सहज होती है।
- चूड़ामणि रत्न चार अंगुल लम्बा और दो अंगुल चौड़ा प्रमाण वाला होते हुए रोग-शोक नाशक तथा बारह योजन तक प्रकाश को विस्तृत करने वाला भी वर्णित किया गया है।
- धर्मरत्न (चर्मरत्न) दो हाथ प्रमाण होता है परन्तु प्रसंगवश चक्रवर्ती का हाथ लगते ही उसका विस्तार बारह योजन-प्रमाण हो जाता है, और विशेष इतना ही नहीं बल्कि आवश्यकतानुसार विस्तृत किये गये धर्मरत्न पर प्रातः बोया हुये धान्य, अनाज व फलादि सायंकाल तक सपक्व हो भोज्य योग्य हो जाया करते हैं।

प्र. 329 चक्रवर्ती के इन चौदह रत्नों की रक्षा-सुरक्षा करने हेतु कोई देवादिक सुनिश्चित होते हैं क्या?

उत्तर हाँ; चक्रवर्ती के सेनापति आदिक चौदह रत्नों में से प्रत्येक रत्न की रक्षा-सुरक्षा एक-एक हजार यक्ष देव किया करते हैं जिनकी नियोगनी यक्षणी भी इस कार्य में सहयोगी होती हैं।

प्र. 330 हजारों यक्ष देव देवियों से सुरक्षित सुभौम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सप्तम् पृथ्वी के सबसे घोर नरक में जाकर घोर दुःखों का फल भोगने लगे उन्हें नरक में जाने से वे यक्ष देव-देवी क्यों नहीं बचा सके?

उत्तर संसारी जीवों के पुण्य और पाप के फल को बदलने या टालने में कोई भी सरागी देवी-देवता समर्थ नहीं होते। स्वयंकृत कर्म का फल संसारियों को भोगना ही पड़ता है। वीतरागी पञ्चपरमेष्ठी की भक्ति से अर्जित पुण्य; पाप को भी टालने या बदलने में कारण बन सकता है बस इतना ही कहना शेष होगा कि सामने वाला भव्य सम्यग्दृष्टि और तीव्र धर्म पुरुषार्थी होना चाहिए। न कि किसी यक्ष देव-देवी के भरोसे रहना चाहिए।

प्र. 331 चक्रवर्ती के चौदह रत्न कहाँ- किस जगह उत्पन्न होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों में से सेनापति, गृहपति, पुरोहित और स्त्रीरत्न स्व-स्व नगरों में उत्पन्न होते हैं। गजपति और अश्व रत्न विजयार्ध पर्वत पर उत्पन्न होते हैं। चक्र, छत्र, खड्ग और दण्ड रत्न

आयुधशाला में उत्पन्न होते हैं तथा काकिणी, चूड़ामणि और धर्म (चर्म) रत्न श्रीगृह में उत्पन्न होते हैं।

प्र. 332 चक्रवर्ती के दशांग भोगों के अन्तर्गत नव निधियाँ कौन-सी होती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की दिव्य नव-निधियाँ- 1. कालनिधि, 2. महा कालनिधि, 3. माणक निधि, 4. पिंगल निधि, 5. नैसर्पनिधि, 6. पद्मनिधि, 7. पाँडुक निधि, 8. शंखनिधि और 9. सर्वरत्ननिधि।

प्र. 333 चक्रवर्ती की काल नामक निधि कौन-कौन-से पदार्थों को देने वाली सर्वोत्तम निधि कहलाती है?

उत्तर सर्वप्रथम यह कालनिधि सर्वऋतुओं अनुरूप द्रव्य फल-फूलादिक फलती है तथा इस निधि के माध्यम से ज्योतिषशास्त्र, निमित्तशास्त्र, न्याय शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, छंदालंकार शास्त्र, लोक व्यवहार शास्त्र और पुराण आदिक का सद्भाव अर्थात् प्राप्ति होती है।

प्र. 334 चक्रवर्ती की महाकाल नामक निधि में किन-किन वस्तुओं का सद्भाव पाया जाता है?

उत्तर चक्रवर्ती की महाकाल निधि से षट्कर्मों के योग्य साधन तथा भोजन और भाजन (बर्तन) एवं अनेक धातुएँ प्राप्त होती हैं।

प्र. 335 चक्रवर्ती की माणक नामक निधि राज्य में कौन-सी वस्तुएँ उपलब्ध कराती है?

उत्तर चक्रवर्ती की माणक निधि कवच, ढाल, तलवार, बाण, शक्ति, धनुष तथा चक्र आदिक नाना प्रकार के दिव्य शस्त्रों व आयुधों के साथ नीति शास्त्रों को भी प्रदान कराती है।

प्र. 336 चक्रवर्ती की पिंगल नामक निधि कौन-सी वस्तुओं से परिपूर्ण करती है?

उत्तर चक्रवर्ती की पिंगल निधि कटक, कटिसूत्र, कुण्डल और केयूर इत्यादिक अनेक दिव्य आभूषणों से पुण्यवानों को परिपूर्ण करती है।

प्र. 337 चक्रवर्ती की नैसर्प-निधि से क्या-क्या सुख रूप साधन उपलब्ध होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की नैसर्प नामक निधि से आसन, शय्या, प्रासाद व मंदिरों की सहज रूप से उपलब्धि हो जाया करती है।

प्र. 338 चक्रवर्ती की पद्मनामक निधि कौन-से वस्त्र प्रदान करती है?

उत्तर चक्रवर्ती की पद्मनिधि पादाम्बर, चीन, महानेत्र, दुकूल, उत्तम कम्बल तथा नाना प्रकार के वर्णादिक से परिपूर्ण वस्त्रों को प्रदान करती है।

प्र. 339 चक्रवर्ती की पाण्डुक नामक निधि कौन-से पदार्थों को फलती है?

उत्तर चक्रवर्ती की पाण्डुक-निधि शालि, ब्रीहि, जौ आदिक समस्त धान्य तथा मनोहर षट् रसादिक से परिपूर्ण करती है।

प्र. 340 चक्रवर्ती की शंख नामक निधि कौन-सी वस्तुएँ अर्पित कर भव्यों की श्रवणेन्द्रिय के लिए संतृप्त करती है?

उत्तर चक्रवर्ती की शंख नामक निधि भेरी, शंख, नगाड़े, वीणा, झल्लरी, मृदंग और नाना तरह के वाद्यों को अर्पित कर भव्यजनों की श्रवणेन्द्रिय को प्रफुल्लित करने वाली होती है।

प्र. 341 चक्रवर्ती की सर्वरत्न नामक निधि पुण्यवानों के लिए कौन-कौन-से उत्तमोत्तम रत्नों को फलती है?

उत्तर चक्रवर्ती के सर्व रत्न निधि इन्द्रनीलमणि, महानीलमणि, वज्रमणि (सूर्यकान्तमणि और चंद्रकान्त मणि) आदिक बड़ी-बड़ी ज्योति शिखा के धारक उत्तमोत्तम रत्नों को कल्पतरुसम फलती है।

प्र. 342 चक्रवर्ती की नवनिधियाँ कहाँ उत्पन्न (प्राप्त) होती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के महापुण्य-प्रभाव से भोगोपभोग को देने वाली ये अक्षय नवनिधियाँ श्रीपुर में उत्पन्न (प्रकट) होती हैं, और दूसरे मत से ये नवनिधियाँ नदीमुख से उत्पन्न होती हैं।

प्र. 343 चक्रवर्ती की नवनिधियों की रक्षा कौन करते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की नवनिधियों की रक्षा हमेशा निधिपालक नामक देव किया करते हैं और दूसरे मत से प्रत्येक निधि की रक्षा में एक-एक हजार यक्ष नियुक्त होते हैं।

प्र. 344 चक्रवर्ती की नवनिधियाँ किस रत्न के आधीन रहती हैं?

उत्तर सर्व मनोरथों को पूर्ण करने वाली ये नवनिधियाँ गृहपति रत्न के आधीन होती हैं।

प्र. 345 चक्रवर्ती की नवनिधियों का आकार व प्रमाणादिक किस तरह का होता है?

उत्तर चक्रवर्ती की नव निधियाँ गाड़ी के सदृश आकार वाली चार-चार भौरों (चक्रों), आठ-आठ पट्टियों से सहित नौ योजन चौड़ी, बारह योजन लम्बी, आठ योजन गहरी और वक्षार गिरि के समान विशाल कुक्षी से सहित होती हैं।

प्र.346 चक्रवर्ती व राजाओं के चार कर्त्तव्य कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों के चार कर्त्तव्य इस तरह होते हैं-

1. आत्मपालन- निजात्म रक्षा की व्यवस्था करना।

2. मतिपालन- अपनी बुद्धि व विवेक को जाग्रत रखना।

3. कुलपालन- राजकुलाचार पर ध्यान रखना। और

4. प्रजापालन- पुत्रवत् प्रजा का पालन करना।

प्र.347 चक्रवर्तियों की चार तरह की राज विद्याएँ कौन-सी हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों की चार तरह की राजविद्याएँ इस तरह होती हैं-

1. आन्वीक्षिकी- अपना स्वरूप जानना, निजबल की पहचान करना, हेयोपादेय का ज्ञान होना, सत्यासत्य की समझ होना और रत्न परीक्षक की तरह सूक्ष्म दृष्टि का होना।

2.**त्रयी**- शास्त्रानुसार धर्म-अधर्म का मर्म समझकर अधर्म छोड़कर धर्म में प्रवृत्ति करना।

3. **वार्ता**- अर्थ-अनर्थ को समझकर प्रजाजनों का रक्षण करना।

4. **दण्डनीति**- योग्य दण्ड-विधान द्वारा दुष्ट-जनों को मार्ग पर लाना।

प्र. 348 चक्रवर्ती व राजाओं के छह विशेष गुण कौन-से होते हैं?

उत्तर राजाओं के छह गुण इस तरह होते हैं-

1. **संधि**- अन्य राजाओं से प्रेम-वात्सल्य व्यवहार बनाकर रखना।

2. **निग्रह**- अन्याय रोकने के लिए युद्ध करना।

3. **यान**- विविध प्रकार के वाहनों व साधनों का ज्ञान।

4. **आसन**- राज्य व्यवस्थानुसार स्थान का अनुभव।

5. **संस्थान**- वचन का दृढ़ संकल्प।

6. **आश्रय**- अपने से बलिष्ठ का सहयोग लेना और अपने से कमजोर को सहारा देना।

प्र.349 मुकुटबद्ध राजा कितनी श्रेणियों का स्वामी होता है?

उत्तर मुकुटबद्धराजा अठारह श्रेणियों का स्वामी होता है, जो श्रेणियाँ इस तरह हैं-

1. **सेनापति**- समस्त सेनाओं का नायक, 2. **गणकपति**- ज्योतिषी आदिकों का नायक, 3. **वणिक्पति**- व्यापारियों का नायक, 4. **मंत्री**- पंचांग, मंत्र-विषय में प्रवीण, 5. **दण्डपति**-सेना नायक, 6. **महत्तर**- कुलवान अर्थात् कुलविशेष में उच्चता, 7. **तलवर**-कोतवाल का स्वामी (नगरकोतवाल) 8. **ब्राह्मण**-वर्ण प्रमुख (स्वामी), 9. **क्षत्रिय (क्षत्री)**-शरणागतों का रक्षक, 10. **वैश्य**- व्यापारी, 11. **शूद्र**- सेवा कार्य-कारक, 12. **हस्थी**-विजयश्री दाता, 13. **अश्व**- सैनिक सवारी, 14. **रथ**- आवागमन कारक, 15. **पदाति**-चतुरंग सेना-बलस्वामी, 16. **पुरोहित**-राज-पण्डित, 17. **आमात्य**-देश का अधिकारी और 18. **महामात्य**-समस्त राज्यकार्यों का अधिकारी।

प्र.350 मुकुटबद्ध राजाओं में विशिष्ट पदस्थान कौन-से होते हैं?

उत्तर 500 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी अधिराजा होता है। 1000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी महाराजा होता है। 2000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी अर्धमाण्डलीक होता है। 4000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी माण्डलीक होता है। 8000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी महामाण्डलीक होता है। 16000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी अर्धचक्री (त्रिखण्डाधिपति) होता है और 32000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी सकल चक्रवर्ती (षट्खण्डाधिपति) होता है।

प्र.351 चक्रवर्ती का स्त्री परिवार कितना और किस जगह का होता है?

उत्तर चक्रवर्ती की स्त्री परिवार एक पट्टरानी से अतिरिक्त 96 हजार स्त्री रूप होता है। इनमें आर्य खण्ड से 32 हजार राजकन्यायें, विजयार्धश्रेणी से सम्बन्धित 32 हजार विद्याधर राज-कन्यायें और पंचम्लेच्छ खण्डों से 32 हजार राजकन्यायें प्राप्त होती हैं।

प्र.352 चक्रवर्ती की पट्टरानी से वंशोत्पत्ति (संतानोत्पत्ती) क्यों नहीं होती?

उत्तर चक्रवर्ती की पट्टरानी शंखावर्त योनियुत होने के कारण वह गर्भ-धारण की अयोग्य स्थिति में बंध्या ही रहती है और वंशोत्पत्ति से वंचित रहती है।

प्र.353 चक्रवर्ती की पट्टरानी से अतिरिक्त अन्य रानियों से कितनी संतानें (पुत्र-पुत्रियाँ) उत्पन्न होती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की संख्यात हजार संतानें उत्पन्न होती हैं।

प्र.354 चक्रवर्ती का बन्धुवर्ग कितना विशाल होता है?

उत्तर चक्रवर्ती का बन्धुवर्ग 50 हजार संख्या में बड़ा विशाल होता है।

प्र.355 चक्रवर्ती के सम्पूर्ण वैद्य कितनी संख्या में होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के शारीरिक वैद्य 361 एवं इतर वैद्य 361 होते हैं।

प्र.356 चक्रवर्ती के रसोइयों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती के रसोइयों की संख्या 360 होती है।

प्र.357 चक्रवर्ती के अंग रक्षकों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती के अंगरक्षकों की संख्या 360 होती है।

प्र.358 चक्रवर्ती के परिचारक (सेवक) गणबद्धदेव कितने होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के परिचारक (सेवक) गणबद्धदेव 32 हजार होते हैं।

प्र.359 चक्रवर्ती की नाट्यशालाओं की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती की नाट्यशालाओं की संख्या 32 हजार होती है।

प्र.360 चक्रवर्ती की संगीत शालाओं की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती की संगीत शालाओं की संख्या 32 हजार होती है।

प्र.361 चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने देश होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के अधीनस्थ 32 हजार देश होते हैं।

प्र.362 चक्रवर्ती के राज्य में कृषि-उपयोगी कितने हल होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में कृषि उपयोगी एक करोड़ हल होते हैं।

प्र.363 चक्रवर्ती के राज्य में कितने गौ मण्डल (गौशालाएँ) होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में तीन करोड़ गौ मण्डल होते हैं।

प्र.364 चक्रवर्ती के गृह (राजभवन) में रसोई-पाक हेतु कितने स्वर्ण के बड़े हण्डे (बर्तन) होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राजगृह में एक करोड़ स्वर्ण के हण्डे होते हैं।

प्र.365 चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने ग्राम होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के अधीनस्थ दीवार से घिरे 96 करोड़ ग्राम होते हैं।

प्र.366 चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने नगर होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के अधीनस्थ परकोटे और चार द्वारों से युक्त 75 हजार नगर होते हैं।

प्र.367 चक्रवर्ती के राज्य में कितने खेट होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में नदी व पर्वतों से वेष्ठित गाँव रूप 76 करोड़ खेट होते हैं।

प्र.368 चक्रवर्ती के राज्य में कितने खर्वट होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में पर्वतों से घिरे हुए गाँव रूप 24 हजार खर्वट होते हैं।

प्र.369 चक्रवर्ती के राज्य में कितने मटम्ब होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में पाँच सौ ग्रामों से संयुक्त रूप चार हजार मटम्ब होते हैं।

प्र.370 चक्रवर्ती के राज्य में कितने पट्टण होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में रत्न उत्पत्ति के स्थान रूप पट्टण 48 हजार होते हैं।

प्र.371 चक्रवर्ती के राज्य में होने वाले संवाहन किसे कहते हैं और वे कितने होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में उपसमुद्र के तट पर रहने वाले गाँवों को संवाहन कहते हैं और वे 74 हजार होते हैं।

प्र.372 चक्रवर्ती के राज्य में होने वाली दुर्गाटवी किसे कहा जाता है और कितनी संख्या में हुआ करती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में पर्वतों पर रहने वाले व वन से घिरे गावों को दुर्गाटवी कहा जाता है और उनकी संख्या 28 हजार होती हैं।

प्र.373 चक्रवर्ती के राजगृह में शंख, भेरी और पटह कितनी संख्या में होते हैं और उनकी ध्वनि सुनाई देने की दूरी का प्रमाण कितना है?

उत्तर चक्रवर्ती के राजगृह में शंख, भेरी (नगाड़ा) और पटह (वाद्यविशेष) की संख्या 24-24 होती है और इनकी ध्वनि 12 योजन तक सुनाई देती है।

प्र.374 भरत चक्रवर्ती के कौन-से पुत्र ने मिथ्या मान्यता से भव-भव में भ्रमण कर, पापों का भार हल्का होने पर अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर-वर्द्धमान तीर्थंकर बन भव-भ्रमण से मुक्ति पायी थी?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के पुत्र मारीचि कुमार ने मिथ्या मान्यता (वेश) प्रचलित कर भव-भव में भ्रमण कर, पापों का भार हल्का होने पर अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर वर्द्धमान तीर्थंकर बन भव-भ्रमण से मुक्ति पायी थी।

प्र.375 भरत चक्रवर्ती के कौन-से और कितने पुत्र नित्य निगोद से आये थे?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के भद्र, विवर्धन आदि शुभ नाम वाले 923 पुत्र नित्य-निगोद से आये थे।

प्र.376 भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्र किस तरह से नित्य-निगोद से निकल कर मनुष्य पर्याय को प्राप्त हुए?

उत्तर जिस भाड़ में भूजे जाने वाले कोई-कोई चने भूजे जाते समय उचटकर भाड़ से बाहर निकल जाते हैं वैसे ही अनादि काल से कर्मों के सताये व दुःखों को भोगते हुए, कर्मों का भार हल्का होने से वे भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्र नित्यनिगोद से बाहर आकर मनुष्य पर्याय को प्राप्त हुए थे।

प्र.377 भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्रों द्वारा अपने माता-पिता आदिक से मौन धारण करने का कारण क्या था?

उत्तर भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्रों द्वारा अपने माता-पिता आदिक से मौन धारण करने का मुख्य कारण बड़ा ही रहस्यमय था कि वे पुत्र अनादिकाल से नित्य निगोद में एक श्वास में अठारह बार जन्म-मरण से होने वाले भयानक दुःखों को सहते-सहते जातिस्मरण कर संसार से भयभीत होकर जगत् के मोह-

जाल से उदासीन हो गये थे और माता-पितादिक से वार्तालाप करने से उन्हें मोह जागृत होगा और हमें संसार के व्यवहार में फँसना पड़ेगा अत: वे मौन-धारण कर धर्म-भावना के चिन्तवन में लीन बने रहते थे।

प्र.378 भरत चक्रवर्ती ने भद्र, विवर्धन आदिक 923 पुत्रों पर किस तरह का संदेह मन में धारण करते हुए तीर्थंकर ऋषभदेव जिनवर के समवसरण में किस-तरह का प्रश्न निवेदित किया था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती ने भद्र, विवर्धन आदिक 923 पुत्रों के मौन धारण पर गूँगेपन का संदेह धारणकर समवसरण में यह प्रश्न किया था कि हे प्रभु, प्रथम तीर्थंकर के कुल में उत्पन्न हुए ये पुत्र गूँगे क्यों हैं?

प्र.379 भरत चक्रवर्ती द्वारा पुत्रों के गूँगेपन से सम्बन्धित पूछे जाने पर उसे भगवान् की वाणी द्वारा क्या समीचीन उत्तर प्राप्त हुआ था?

उत्तर भगवान् ने 923 पुत्रों के सम्बन्ध में कहा कि ये पुत्र गूँगे नहीं हैं बल्कि ये असार रूप इस संसार व जगत् से उदासीन हैं और यहाँ अब ये मोक्षमार्ग पाने अवश्य बोलेंगे।

प्र.380 भरत चक्रवर्ती के ऐसे निकट भव्य 923 पुत्रों ने आत्मकल्याण रूप मोक्ष-पुरुषार्थ को किस तरह सफल बनाया था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के निकट भव्य पुत्रों ने आत्म कल्याण रूप मोक्ष-पुरुषार्थ हेतु समवसरण में प्रभु से नम्र निवेदन के साथ मौन खोलते हुए अपनी आंतरिक भावना प्रकट करते हुए कहा कि हे प्रभु! हम अनादि-काल से निगोद के दु:ख सहते-सहते संसार के दु:खों से अत्यन्त भयभीत होकर आपकी शरण में आये हैं, हम आप जैसे अनन्त सुखी होकर संसार से मुक्ति की तीव्र अभिलाषा रखते हैं अत: हमें मोक्षमार्ग से उपकृत कीजिये जिस साधन से हम सम्पूर्ण दुष्ट कर्मों का क्षय कर मोक्ष-धाम को प्राप्त कर सकें; और उन सभी पुत्रों ने अपने पिता आदिक परिजनों को अचरज में डालते हुए सर्व वस्त्राभूषणों का त्याग कर, केशलोंच कर, निर्ग्रन्थ-मुनि दीक्षा को धारण कर लिया था।

प्र.381 भद्र, विवर्धन आदिक 923 पुत्रों ने निर्ग्रन्थ-मुनि बन तपस्या के माध्यम से क्या फल प्राप्त किया था?

उत्तर भद्र, विवर्धन आदिक 923 मुनियों ने अपने उत्कृष्ट वैराग्य घोर तपस्या व ध्यान के माध्यम से अल्प काल में ही सम्पूर्ण कर्मों की निर्जरा कर मोक्ष प्राप्ति-द्वारा सिद्धालय रूप अष्टम वसुधा में अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुखादिक गुणों के भण्डार रूप आत्मिक वैभव को पाकर अनन्तकाल पर्यन्त के लिए स्थायित्व अवस्था को प्राप्त किया था।

प्र.382 भरत चक्रवर्ती के लिए वैराग्य किस तरह हुआ एवं उनके वैराग्य का कारण क्या था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती ने समवसरण में वृषभनाथ भगवान् का यह उपदेश सुना कि "अरे भव्य जीवो! तुम विकारी भावों को शीघ्र छोड़ो और हमारे समान अपने जैसे ज्ञान, दर्शन, सुख और शक्ति के स्वामी बन स्वात्मा में राज्य करो" तब भगवान् का यह संदेश भरतेश्वर के अत्यन्त विरक्त मन में प्रवेश कर गया और एक दिवस दर्पण में मुख देखते समय भरत चक्रेश्वर की दृष्टि अपने एक श्वेत केश पर पड़ी; उसे देखते ही बस; भरतेश्वर को ऐसा लगा कि मानों मुक्तिपुरी से भगवान् के द्वारा प्रेषित विशिष्ट-संदेश-

वाहक दूत ही आ गया हो और वे संसार, शरीर और भोग से निर्विण्ण (वैरागी) हो गये।

प्र.383 भरतेश्वर ने वैरागी बनकर क्या कार्य सम्पन्न किया था?

उत्तर भरतेश्वर का आध्यात्मिक जीवन मोक्ष इच्छुक जनों के लिए चमत्कार का जनक रहा है उन्होंने छह खण्ड प्रमाण पौद्गलिक साम्राज्य का त्याग करके मुनि पद धारण करते समय केशों का लोच किया और तत्काल ही, नग्न दिगम्बर मुद्रा के साथ शुक्ल ध्यान के माध्यम से शत्रुध्वंस कलाँ में पारंगत वे सुयोगी भरत अंतर्मुहूर्त्त में ही मोहासुर का विनाश करके सर्वज्ञता रूप केवलज्ञान साम्राज्य के स्वामी हो गए। ऐसे मंगल क्षण में देवों ने गंधकुटी की रचना कर बत्तीस इन्द्रों ने भगवान् भरत की दिव्य पूजा सम्पन्न की।

प्र.384 केवलज्ञानी-सर्वज्ञ श्री भरत भगवान् से किस तरह से जन कल्याण सम्पन्न हुआ था।

उत्तर दीक्षा लेते ही अल्पकाल में ही सर्वज्ञता व कैवल्यता प्राप्त कर तीर्थंकर की अपेक्षा अद्भुत् विशेषता प्रदर्शित करने वाले भगवान् भरत ने भगवान् ऋषभनाथ के समान भरत क्षेत्र की आर्यखण्ड की धरा पर समस्त देशों में विहार कर जीवों के निज-आत्मकल्याण हेतु अपनी दिव्य वाणी के द्वारा उनका आत्मोद्धार किया था।

प्र.385 भगवान् भरत के लिए निर्वाण-मोक्ष की प्राप्ति कहाँ से हुई थी?

उत्तर भगवान् भरत के लिए निर्वाण की प्राप्ति कैलाश पर्वत से हुई थी।

प्र.386 भरत चक्रवर्ती के अलावा अन्य चक्रवर्तियों के लिए कौन-सी गति की प्राप्ति हुई थी?

उत्तर मोक्ष-पद को प्राप्त भरत चक्रवर्ती के अलावा सगर चक्रवर्ती भी मोक्ष-पद को प्राप्त हुए। मघव चक्रवर्ती ने सौधर्म स्वर्ग को पाया, सनत्कुमार चक्रवर्ती ने सानत्कुमार स्वर्ग को ही पाया। शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरहनाथ चक्रवर्ती ने मोक्ष-पद को पाया। सुभौम चक्रवर्ती ने महातमः पृथ्वी को पाया। पद्मनाथ (महापद्म), हरिषेण और जयसेन चक्रवर्ती ने मोक्ष-पद को प्राप्त किया। अंत में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने महातमः पृथ्वी को पाया। इस तरह स्व-स्व कृत कर्मों से चक्रवर्तियों ने भिन्न-भिन्न गति प्राप्त किया था।

प्र.387 नारायण महापुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर पूर्व जन्म के विशिष्ट पुण्यार्जन से जो स्वर्ग जाकर पुनः यहाँ कर्म भूमि के मनुष्य रूप में त्रिखण्ड के अधिपति रूप पुण्य से जन्मधारण करता है उसे नारायण महापुरुष कहते हैं।

प्र.388 नारायण को किन-किन नामों से पुकारते हैं?

उत्तर नारायण को अर्धचक्री, वासुदेव, गोविन्द और हरि आदिक नामों से पुकारते हैं।

प्र.389 नारायण और प्रतिनारायण (प्रतिवासुदेव, प्रतिशत्रु, प्रतिहरि) में क्या विशेषता होती है?

उत्तर चक्र रत्न प्रतिनारायण के यहाँ उत्पन्न होता है लेकिन नारायण से परास्त होने पर चक्ररत्न का स्वामी नारायण हो जाया करता है यही इन दोनों में मुख्य विशेषता है।

प्र.390 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमासुषमा काल में उत्पन्न हुए नौ

नारायणों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर नौ नारायणों के नाम क्रमशः- 1. त्रिपिष्ट (त्रिपृष्ट), 2. द्विपिष्ट (द्विपृष्ट), 3. स्वयंभू, 4. पुरुषोत्तम, 5. नरसिंह (पुरुषसिंह), 6. पुंडरीक (पुरुषवर), 7. दत्त (पुरुषदत्त), 8. लक्ष्मण और 9. कृष्ण इस प्रकार हैं।

प्र.391 नौ नारायणों की जन्म भूमियों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर नौ नारायणों की जन्म भूमियाँ क्रमशः 1. पौदनपुर, 2. द्वारकापुर, 3.हस्तिनागपुर, 4. हस्तिनागपुर, 5. चक्रपुर, 6. कुशाग्रपुर, 7. मिथलापुर, 8. अयोध्यापुरी और 9. मथुरानगरी इस तरह बतलाई गई हैं।

प्र.392 त्रिपिष्ट आदिक नौ नारायणों के जनक और जननी के नाम कौन-से थे?

उत्तर त्रिपिष्ट आदिक नौ नारायणों के जनक व जननी के नाम क्रमशः -

1. प्रजापति-मृगावती, 2. ब्रह्मभूत-माधवी, 3. रौद्रनन्द-पृथिवी, 4. सौम-सीता, 5. प्रख्यात-अम्बिका, 6. वरसेन-लक्ष्मी, 7. शिवाकर-केशिनी, 8. दशरथ-सुमित्रा, 9. वसुदेव-देवकी इस तरह नाम थे।

प्र.393 पूर्व कथित नारायणों प्रतिशत्रु-प्रतिनारायणों के नाम क्या थे?

उत्तर नौ प्रतिनारायणों के नाम क्रमशः - 1. अश्वग्रीव, 2. तारक, 3. मेरक, 4. निशुंभ, 5. प्रल्हाद (प्रहरण), 6. मधुकैटभ, 7. बली, 8. रावण और 9. जरासंध इस तरह थे।

प्र.394 नौ प्रतिनारायणों की जन्म-राजधानियों के नाम क्या थे?

उत्तर नौ प्रतिनारायणों की जन्म-राजधानियाँ क्रमशः - 1. अल्कापुर, 2. विजयपुर, 3. नंदनपुर, 4. हरिपुर, 5. सिंहपुर, 6. पृथ्वीपुर, 7. सूर्यपुर, 8. लंका और 9. राजगृही इस प्रकार थे।

प्र.395 सर्व नारायणों और प्रतिनारायणों की भविष्य की गति (अगले भव) का क्या नियम है?

उत्तर सर्व नारायण और प्रति नारायण भोग-रुचि और बहुल-परिग्रह की आशा से मरणकर अधोलोक वासी होते हैं। नौ नारायण और प्रतिनारायण क्रमशः -1. महातम प्रभा पृथ्वी में, 2. तमः प्रभा पृथ्वी में, 3. तमःप्रभा पृथ्वी में, 4. तमः प्रभा पृथ्वी में, 5. तमःप्रभा पृथ्वी में, 6. तमःप्रभापृथ्वी में 7. धूम प्रभा पृथ्वी में, 8. पंकप्रभा पृथ्वी में और 9. बालुका प्रभा पृथ्वी में पहुँचे थे।

प्र.396 प्रत्येक अर्धचक्री के कौन-से आयुध अथवा महा रत्न कौन-से होते हैं?

उत्तर प्रत्येक अर्धचक्री के 1. सुनन्दक नामक खड्ग, 2. पञ्चजन्य नामक शंख, 3. शार्ङ्ग नामक धनुष, 4. सुदर्शन नामक चक्र, 5. कौस्तुभ नामक मणि, 6. अमोघा नामक शक्ति और 7. कौमुदि नामक गदा इस तरह सप्त रत्न होते हैं।

प्र.397 बलभद्र महापुरुष किन्हें कहते हैं?

उत्तर बलभद्र महापुरुष नारायण के सगे भाई होते हैं ये चार या पाँच रत्नों के स्वामी तथा अपार शक्ति के धारक व वैभवशाली होते हैं।

प्र.398 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमासुषमा काल में उत्पन्न हुए नौ

बलभद्रों के नाम क्या थे, वे कौन-से तीर्थंकरों के काल में उत्पन्न हुए और उन्होंने आगे कौन-सी गति को प्राप्त किया?

उत्तर नौ बलभद्रों के नाम, तीर्थकाल और आगे प्राप्त हुई उनकी गति क्रम तालिका इस प्रकार है-

क्र.	नाम	तीर्थकाल	निर्वाण व गति-प्राप्ति
1.	विजय	भ.श्रेयांसनाथ के तीर्थ में	निर्वाण (मोक्ष)
2.	अचल	भ. वासुपूज्य के तीर्थ में	निर्वाण
3.	सुधर्म (भद्र)	भ. विमल के तीर्थ में	निर्वाण
4.	सुप्रभ	भ. अनन्तनाथ के तीर्थ में	निर्वाण
5.	सुदर्शन	भ.धर्मनाथ के तीर्थ में	निर्वाण
6.	नन्दीषेण (अरनन्द)	भ. अरहनाथ के बाद	निर्वाण
7.	नन्दीमित्र (नन्दन)	भ. मल्लिनाथ के बाद	निर्वाण
8.	रामचन्द्र	भ. मुनिसुव्रत के बाद	निर्वाण
9.	बलिराम (पद्म)	भ. नेमिनाथ के तीर्थ में	ब्रह्म स्वर्ग

प्र.399 बलभद्रों को प्राप्त होने वाले चार या पाँच रत्नों अथवा आयुधों के नाम कौन-से थे?

उत्तर 1. रत्नमाला (हार), 2. लांगल (अपराजित नामक हल), 3. मूसल, 4. स्यन्दन (जिसका अर्थ जन दिव्य-गदा या दिव्य रथ भी करते हैं) और 5. शक्ति इस तरह पाँच रत्न तथा अन्य मत से 1. हलायुध, 2. बाण, 3. गदा और 4. भाला ऐसे चार महारत्न होते हैं।

प्र.400 रुद्र नामक पुरुष कौन कहलाते हैं? उनके नाम, वे किन तीर्थंकरों के तीर्थ काल में उत्पन्न हुए एवं उनका अगला भव कौन-सा हुआ था?

उत्तर

क्र.	नाम	तीर्थकाल	गति गमन
1.	भीमवली	भ. ऋषभनाथ के तीर्थ में	महातम:प्रभा पृथ्वी
2.	जितशत्रु (बलि)	भ. अजितनाथ के तीर्थ में	महातम:प्रभा पृथ्वी
3.	शंभु-रुद्र	भ. पुष्पदन्त के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
4.	वैश्वानर (विश्वानल)	भ. शीतलनाथ के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
5.	सुप्रतिष्ठ	भ.श्रेयांसनाथ के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
6.	अचल	भ. वासुपूज्य के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
7.	पुंडरीक	भ. विमलनाथ के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
8.	अजितंधर	भ. अनन्तनाथ के तीर्थ में	धूम प्रभा पृथ्वी
9.	जितनाभि (अजिनाभि)	भ. धर्मनाथ के तीर्थ में	पंक प्रभा पृथ्वी
10.	पीठ	भ. शान्तिनाथ के तीर्थ में	पंक प्रभा पृथ्वी
11.	सात्यकी पुत्र-स्थाणु	भ. महावीर के तीर्थ में	बालुका प्रभा पृथ्वी

प्र.401 कामदेव किन्हें कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकरों के काल में अनुपम-अत्यन्त सुन्दर रूप को धारण करने वाले पुण्यशाली, उत्कृष्ट सुख भोक्ता तद्भव मोक्षगामी (जितेन्द्रिय बनकर मोक्ष पद पाने वाले) सत्पुरुष (महापुरुष) कामदेव कहलाते हैं।

प्र.402 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमा-सुषमा काल में उत्पन्न हुए चौबीस कामदेवों के नाम तीर्थकाल और उनके निर्वाण क्षेत्र को तालिका में दर्शाइये?

उत्तर चौबीस कामदेवों के नाम, तीर्थकाल और निर्वाण क्षेत्र क्रमशः-

क्र.	नाम	तीर्थकाल	निर्वाणक्षेत्र
1.	बाहुबली	ऋषभनाथ	पोदनपुर
2.	प्रजापति	अजितनाथ	पोदनपुर
3.	श्रीधर	संभवनाथ	पोदनपुर
4.	दर्शनभद्र	अभिनन्दनाथ	पोदनपुर
5.	प्रसेनचन्द्र	सुमतिनाथ	पोदनपुर
6.	चन्द्रवर्ण	पद्मप्रभ	पोदनपुर
7.	अग्निमुख (अनलवर्ण)	सुपार्श्वनाथ	पोदनपुर
8.	सनत्कुमार	चन्द्रप्रभ	सिद्धवरकूट
9.	वत्सराज	पुष्पदन्त	सिद्धवरकूट
10.	कनकप्रभ	शीतलनाथ	सिद्धवरकूट
11.	मेघप्रभ	श्रेयांसनाथ	सिद्धवरकूट
12.	शांतिनाथ	शांतिनाथ	सम्मेदशिखर
13.	कुन्थुनाथ	कुंथुनाथ	सम्मेदशिखर
14.	अरहनाथ	अरहनाथ	सम्मेदशिखर
15.	विजयराज	अरहनाथ	सिद्धवरकूट
16.	श्रीचन्द्र	मल्लिनाथ	सिद्धवरकूट
17.	नलराज	मल्लिनाथ	सिद्धवरकूट
18.	हनुमन्त	मुनिसुव्रतनाथ	तुंगीगिरि
19.	बलिराज	नमिनाथ	सिद्धवरकूट
20.	वसुदेव	नेमिनाथ	सिद्धवरकूट
21.	प्रद्युम्नकुमार	नेमिनाथ	ऊर्जयन्तगिरि
22.	नागकुमार	पार्श्वनाथ	कैलासपर्वत

23. जीवन्धर	महावीर	सिद्धवरकूट
24. जम्बूस्वामी	महावीर	जम्बूवन

प्र.403 भरत चक्रवर्ती के सत्ता अभिमान को चूर कर त्रययुद्ध में परास्त करने वाले और भ्रात पर चक्र चलाने रूप स्वार्थी संसार से विरक्त हो प्रवज्या (दीक्षा) धारण कर एक वर्ष तक उपवास धारण कर खड्गासन-कायोत्सर्ग में ध्यान कर कैवल्य की उपलब्धि द्वारा गन्धकुटी में विराजित हो जन-जन का क्षेम करने वाले महाबलशाली कामदेव और राजपद से अलंकृत बाहुबली को मोक्ष की प्राप्ति किन तीर्थंकर के पूर्व किन पुण्यात्मा के पश्चात् हुई थी?

उत्तर ऐसे कामदेव बाहुबली को तीर्थंकर ऋषभदेव के पूर्व एवं भरत चक्रवर्ती के छोटे भाई अनन्तवीर्य अपर नाम महासेन के मोक्ष जाने के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

प्र.404 कामदेव-बाहुबली और अनन्तवीर्य ने सांसारिक वैभव का त्यागकर वैरागी बन मोक्ष-पथ को किस कारण अपनाया था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के द्वारा बाहुबली व अनन्तवीर्य को अपनी दासता स्वीकार करवाने या अपने चरणों में नम्रीभूत करने के हटाग्रह रूप व्यवहार से दु:खी-उदासीन होकर असार रूप संसार को त्यागकर अनन्तवीर्य (महासेन) और कामदेव-बाहुबली ने मोक्ष का पथ अपनाया था।

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु चतुर्थ प्रश्न पत्र

समय : 3.. दिन | अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. भगवान बाहुबली के लिए मोक्ष की प्राप्ति किसके पूर्व व किसके बाद हुई थी?
प्र. 2. बलभद्र महापुरुष किन्हें कहते हैं?
प्र. 3. कामदेव बाहुबली और अनन्तवीर्य ने मोक्षपथ किस कारण अपनाया था?
प्र. 4. कामदेव महापुरुष किन्हें कहते हैं?
प्र. 5. नारायण और प्रतिनारायण में क्या विशेषता होती है?
प्र. 6. नारायण महापुरुष किन्हें कहते हैं?
प्र. 7. चक्रवर्ती महापुरुष कौन कहलाते हैं?
प्र. 8. चक्रवर्ती के दशांगभोग कौन-से हैं?
प्र. 9. चक्रवर्ती के चौदह रत्नों के नाम क्या हैं?
प्र.10. चक्रवर्ती के चूड़ामणि रत्न की क्या विशेषता है?
प्र.11. चक्रवर्तियों की नवनिधियाँ कौन-सी थीं?
प्र.12. चक्रवर्तियों की नव निधियों का आकार व प्रमाण कैसा था?
प्र.13. चक्रवर्ती की नवनिधियों की रक्षा कौन करता है?
प्र.14. चक्रवर्ती की सर्व-रत्न निधि क्या फल देती है?
प्र.15. राजाओं के चार कर्त्तव्य कौन-से होते हैं?
प्र.16. चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने देश होते हैं?
प्र.17. चक्रवर्ती के राज्य में कितनी गौ-शालाएँ होती हैं?
प्र.18. चक्रवर्ती के शंख, भेरी, पटहों की संख्या व उनकी शब्द-श्रवण दूरी कितनी होती है?
प्र.19. भरत चक्रवर्ती के कौन-से पुत्र ने मिथ्यामत के प्रचार से भवभ्रमण कर कब मोक्ष पाया था?
प्र.20. भरत चक्रवर्ती के 923 पुत्रों ने मोक्ष पुरुषार्थ को किस तरह सफल बनाया था?

आधार : आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-'आगम-अनुयोग', (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम..... उम्र .....
पिता/माता/पति का नाम .....
पता .....
.....
मोबाईल/फोन नं. .....

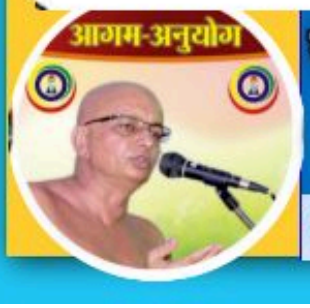

सम्यग्ज्ञान भूषण पदवी हेतु शिविर का आयोजन

आगम अनुयोग प्रश्नोत्तर प्रदीप

मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा- आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

।।श्री महावीराय नमः।।

जीवन-संस्कार-धार्मिक शिविर

भाव- विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड भोपाल द्वारा

विद्यार्जव ऑनलाइन धार्मिक पाठशाला

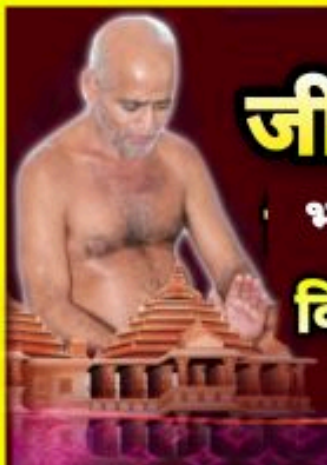

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

आध्यात्म योगी आचार्य गुरुदेव श्री आर्जवसागर जी महाराज

बाल युवाओं के लिए स्वर्णिम अवसर

संस्कार पाएं..भाग्य जगाएं...

पुरुस्कार पाएं

पुण्य कमाएं

ज्ञान बढ़ाएं

सभी को मिलेगा जैन धर्म का प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र एवं विजेताओं को आकर्षक पुरुस्कार

ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम

16 मई से 29 मई 2022

आयु-15 वर्ष तक उम्र

ऑनलाइन- प्रशिक्षण

जैन धर्म के मर्म को समझाने के लिये बाल पीढ़ी हेतु ऑनलाइन पाठशाला का उत्तम प्रयास

शिविर के दौरान आपको गुरु के मुखारविंद से हुई कक्षा के विडियो,ऑडियो व लिखित रूप से ज्ञान प्राप्त कराएंगे।

aarjav vani शिविर में भाग लेने हेतु ग्रुप से जुड़ें....9174843674 पर सूचित करें।